जन वाचन आंदोलन

बाल पुस्तकमाला

" किताबों में चिड़ियाँ चहचहाती हैं
किताबों में खेतियाँ लहलहाती हैं
किताबों में झरने गुनगुनाते हैं
परियों के किस्से सुनाते हैं
किताबों में रॉकेट का राज है
किताबों में साइंस की आवाज है
किताबों का कितना बड़ा संसार है
किताबों में ज्ञान की भरमार है
क्या तुम इस संसार में नहीं जाना चाहोगे?
किताबें कुछ कहना चाहती हैं
तुम्हारे पास रहना चाहती हैं "

–सफ़दर हाश्मी

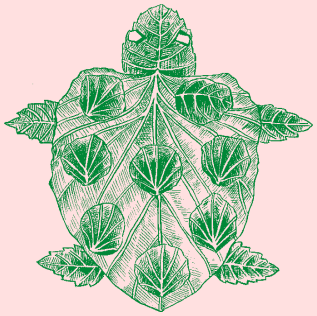

**पेड़ों के पत्तों को इकट्ठा करके,
उनको कागज़ पर चिपकाकर
अनेकों जानवर बनाना संभव है।
कोई पत्ता पांव बनेगा तो कोई पेट।
इस बिना लागत की कला से
बच्चों की सृजनशीलता में चार चांद लगेगें।**

भारत ज्ञान विज्ञान समिति

मूल्य: 10 रुपए B - 64 Price 10 Rupees

पत्तों का चिड़ियाघर

अरविन्द गुप्ता

इस किताब का प्रकाशन भारत ज्ञान विज्ञान समिति ने देश भर में चल रहे साक्षरता अभियानों में उपयोग के लिए किया गया है। जनवाचन आंदोलन के तहत प्रकाशित इन किताबों का उद्देश्य गाँव के लोगों और बच्चों में पढ़ने-लिखने की रुचि पैदा करना है।

पत्तों का चिड़ियाघर
अरविन्द गुप्ता

जनवाचन बाल पुस्तकमाला के तहत
भारत ज्ञान विज्ञान समिति द्वारा प्रकाशित

भारत ज्ञान विज्ञान समिति

रेखांकन : अविनाश देशपांडे
ग्राफिक्स : अभय कुमार झा

प्रकाशन वर्ष: 2003, 2005, 2006

मूल्य: 10 रुपए

Published by Bharat Gyan Vigyan Samithi
Basement of Y.W.A. Hostel No. II, G-Block
Saket , New Delhi - 110017
Phone : 011 - 26569943
Fax : 91 - 011 - 26569773
email: bgvs@vsnl.net

पत्तों का चिड़ियाघर

पत्तों का चिड़ियाघर

पेड़ों के कपड़े पत्ते हैं
यही तो उनके लत्ते हैं
पेड़ों के बस्ते में कितने
खेल-खिलौने सस्ते हैं

पत्तों का है एक संसार
पत्तों के हैं कई प्रकार
हर पत्ते का एक आकार
कोई बरगद कोई अनार

पत्तों को छूकर तो देखो
उनसे हाथ मिलाओ तुम
हंसी-खेल और बातचीत में
उनको दोस्त बनाओ तुम

अखबारों के तह के भीतर
उनको नींद सुलाओ तुम
अगर नींद से जग उठ बैठें
गुन-गुन गीत सुनाओ तुम

इन सूखे पत्तों से खेलो
मन-मर्ज़ी से सजाओ तुम
यह सारे दिलचस्प नमूने
कागज पर चिपकाओ तुम

पीपल का पेट, डंडी की पूंछ
हरी घास की लंबी मूंछ
कनेर के पैर, नीम की नाक
कहीं पे बबूल, कहीं पे ढाक

पत्ते नहीं होते बेजान
उनकी होती खास ज़ुबान
कोई पत्ता बनेगा चेहरा
और कोई बनेगा कान

पेड़ों के पत्तों से बच्चों
बनता सुंदर चिड़ियाघर
सैर करो तुम आज उसी की
जल्दी आओ करो सफर ❐